CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

।। श्री गायत्री पुरस्चरण पुजा पद्धति।।

ॐ श्री १०८ स्वामी विष्णुदेवा नन्दतिर्थ

काशी मुमुक्षु भवन अस्सी, वाराणसी

संवत् २०५४ आस्विन शुक्ल

विजया दशमी

प्रथम सस्करंण १००० प्रति

मूल्य १०/- मात्र

ॐ श्री १०८ स्वामी
विष्णु देवा नन्द तिर्थ

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

।। श्री गुरू चरण कमलेभ्यो नमः।।

ॐ मुकंकरोतिवाचालं पंङ्गु लङ्घयेते गिरिम्
यत्कृपा च महं वन्दे परमानन्द माधवं
ॐ १०८ स्वामि श्री विष्णु देवानन्द तिर्थ को नम्रनिवेदन

भूमिका

श्रीमान् मान्यवर हमारे याहाविद्वान पंडित सर्वोपरिपूजा पद्धति कर्मकान्ड मंत्र उपासना साधन अभ्यास सब करते (वा) कराते हैं - तद्पि गायत्री पूरस्चरण पुजा नहि करपाते। विस्वामित्र कल्प से मात्र होता हैं परन्तु जो कोई साधारण पंडित तथा

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

पुरोहित नहीं कराते हैं करवाने नहीं पाते हैं इसलिये सर्वसाधारण व्यक्ति के लिए बहुत दुःख हो रहा है इसलिये सर्वसाधारण व्यक्ति की सुविधा को ध्यान रखकर सबके लिये गायत्री पूजा पद्धति हमने बहुत परिश्रम से यन्त्र मन्त्र चक्रस हि़त्को सरल वा मोटे अक्षरों वाला छपवाने जा रहे हैं कोई धर्म-प्रेमी के सहायता से आप सबको हितार्थ ग्रन्थ से छुट्टा कर के छप रहा हैं आप लोग गायत्री प्रेमी सर्वसाधारण प्रेमी-भक्त शिरोमणि महानुभाव इस किताब को देख के मनन कर के काम लिजियेगा इसमे श्री वेदान्ताऽचार्य १०८ श्री गायत्री स्वरूप व्रम्मचारी जी के कर कमल से संसोधित और श्री शास्त्री स्वामियों के दृष्टान्त से सन्शोधित कर के साथ में यन्त्र मंत्र चक्र मुर्ति सहित से तैयार

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

हुआ।। मुल मन्त्र परित्यज्य अन्य मन्त्र उपासते।। सिद्धान्नं चपरित्यज्यमिक्ष्या मटतिदुर्मति।। जैसे सबके सब चारो वर्ण के लिये गायत्री भिन्न-भिन्न होति है चारो वर्ण के श्री जाती के लिए भिन्न-भिन्न होती हैं।। अपना वर्ण के मंत्र मे फलित होति है दोश्रा वर्ण के मंत्र जप में पाप प्रयास्चित लगता है। जैसे चोरिके दोष् लगते है अपने वर्णानुसार मंत्र जप करने में व्रम्ह हत्या भी छुट जाते है। दुसरा के मंत्र जप करने में व्रम्म हत्या का दोष लागता है - अस्तु।।

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

अथ गायत्रीपद्धतिः ।

ब्रह्मविष्णुशिवाराध्यां गायत्रीं लोकपावनीम् ।।
नमस्कृत्यानुरोधेनलिखेयं पद्धतिं क्रमात् ।।१।।

साधकःब्राह्मेमुहूर्त्ते चोत्थाय यथोक्तंशौचंकृत्वान द्यादौ स्नानंकृत्वाप्राणायामत्रयंकृत्वा अर्घ्यांतांसं ध्यां कुर्यात् ।। प्राणायामोयथा ।। ॐ भूः ॐ भुवः ॐ स्वः ॐ महः ॐ जनः ॐ तपः ॐ सत्यंॐतत्सवितु र्वरेण्यं भर्गो देवस्यधीमहि ।। धियोयोनःप्रचोद यात् ।। आपोज्योतीरसोऽमृतं ब्रह्मभूर्भुवः स्वरोम् ।। ॐ प्रणवस्य ब्रह्माऋषिःगायत्रीच्छंदः परमात्मादेव ता शरीरशुद्ध्यर्थे जपे विनियोगः ।। ॐ ब्रह्मणे नमः शिरसि ।। ॐ गायत्रीछंद से नमः मुखे ।। ॐ परमात्मदेव तायै नमः हृदये ।। करसंपुटं कृत्वा समस्तदुरितक्ष यार्थे न्यासं करिष्ये ।। ॐ व्याहृतीनां जमदग्नि

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

भरद्वाजात्रिगौतम- काश्यपविश्वामित्रवसिष्ठादि ऋषिभ्योनमः शिरसि।। ॐ सप्तार्चिर निलसवितृप्रजा पतिवरूणेंद्रविश्वेदेवदेवताभ्यो नमः मुखे।। गाय त्र्युष्णिगनुष्टुब्बृहतीपंक्ति- त्रिष्टुब्जगतीछंदोभ्यो नमः हृदि।। एवं करसंपुटं कृत्वा समस्तदुरित क्षयार्थे गायत्रीन्यासः।। ॐ गायत्र्या विश्वामित्र ऋषये नमः शिरसि।। ॐ गायत्रीच्छंद्रसे नमः मुखे।। ॐ परमात्मदेवतायै नमः हृदये।। ॐ भूः नमः हृदये।। ॐ भुवः नमः मुखे।। ॐ स्वः नमः दक्षां से।। ॐ महः नमः वामांसे।। ॐ जनः नमः दक्षिणोरौ।। ॐ तपः नमः वामोरौ।। ॐ सत्यं नमः जठरे।। इतिव्याहृति न्यासः।। अथाक्षरन्यासः।। ॐ तत् नमः गुल्फयो।: ॐ सं नमः पदपार्श्वयोः।। ॐ विं नमः जान्वोः।। ॐ तुं नमः पाद्मुखयोः।। ॐ वंनमः जंघयोः।। ॐ रेंनमः नाभौ।। ॐ णिं नमः हृदये।। ॐ यं न

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

म:कंठे।। ॐ भं नमः हस्तयोः।। ॐ गों नमः मणि बंधयो। ॐ दें नमः कूर्पयो।।। ॐ वंनमः बाहु मूलयोः।। ॐ स्यं नमः आस्ये।। ॐ धीं नमः ना सापुटयोः।। ॐ मं नमः कपोलयोः।। ॐ हिंनमो नेत्रयोः।। ॐ धिं नमः कर्णयोः।। ॐ यों नमः भ्रू मध्ये।। ॐ यों नमः मस्तके।। ॐ नं नमः पश्चिम वक्रे।। ॐ प्रं नमः उत्तरवक्रे।। ॐचों नमः दक्षिण वक्त्रे।। ॐ दं नमः पूर्ववक्रे।। ॐयात् नमः उर्ध्ववक्रे।। इत्यक्षरन्यासः।। अथ पदन्यासः।। ॐ तत् नमः शिरसि।। ॐ सवितुर्नमः भ्रुवोर्मध्ये।। ॐ वरेण्यं नमः नेत्रयोः।। ॐ भर्गः नमः मुखे।। ॐ देवस्य नमः जठरे।। ॐ धीमहि नमः हृदये।। ॐधि यः नमः नाभौ।। ॐ यः नमः गुह्ये।। ॐ नः नमः जा न्वोः।। ॐ प्रचोदयात् नमः पादयोः। ॐ आपो ज्योती रसोऽमृतं ब्रह्म भूर्भुवः स्वरोमिति शिरसि इति पदन्यासः।। अथ

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

पादन्यासः।। ॐतत्सवितुर्व रेण्यं नमः नाभ्यादिपादपर्यंतम्।। ॐ भर्गो देवस्य धीमहि नमः हृदयादिनाभ्यंतम्।। ॐधियो यो नः प्रचोदयात् नमः मूर्धादिहृदयांतम्।। ॐ परोरजसे सावदोम् इति मूर्ध्नि विन्यस्य।। अथ षडंगन्यासः ॐ ब्रह्मणे हृदयायनमः ॐ विष्णवे शिरसे स्वाहा।। ॐ रूद्राय शिखायै वषट्।। ॐ ईश्वराय कवचाय हुम्।। ॐसदाशिवाय नेत्रत्रयाय वौषट।। ॐ सर्वात्म ने अस्त्राय फट्। इति मंत्रेणोर्ध्वाधस्तालत्रयं कृत्वा छोटिकमुद्रया दिग्बंन्धनं विधाय मूलेनं व्यापकं कुर्य्यात्।। इति षडंगम्।। अथ लयांगन्यासः।। ॐ अं आं इं ईं उं ऊं ऋं ॠं लृं लॄं एं ऐं ओं औं अं अः कं खं गं घं ङं चं छं जं झं ञं टं ठं डं ढं णं तं थं दं धं नं पं फं बं भं मं यं रं लं वं शं षं सं हं ळं क्षं।। ॐ भूर्भुवः स्वः तत्सवितुर्वरेण्यं भर्गो देवस्य धीम हि।। धियो योनः प्रचोदयात्।। ॐ क्षं

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

ळं हं सं षं शं वं लं रं यं मं भं बं फं पं नं धं दं थं तं णं ढं डं ठं टं ञं झं जं छं चं ङं घं गं खं कं अः अं औं ओं ऐं एं लॄं लृं ॠं ऋं ऊं उं ईं इं आं अं ॐ तृयादचोप्र नः योयोधिहिमधीस्यवदेर्गोभण्यंरेर्वतुवित्स तस्वःवः र्भुभू ॐ इति हृदयादिमुखांतम्।। एव मेव हृदयादिकेशान्तम्।। तथैव व्याप्य।। इति लयांगन्यास।।। इति विन्यस्य पीठन्यासं कुर्य्यात्।। ॐ मं मंण्डूकाय नमः मूलाधारे।। ॐ कं कालाग्निरूद्राय नमः स्वाधिष्ठाने।। ॐ मं मूलप्रकृत्यै नमः नाभौ।। ॐ आं आधारशक्त ये नमः हृदये।। ॐ कं कूर्माय नमः।। ॐ वं वराहाय नमः।। ॐ धं धारिण्यै नमः।। ॐ सं सुधासिंधवे नमः।। ॐ रं रत्नद्वीपाय नमः।। ॐ मं मणिमंण्डपायनमः।। ॐ कं कल्पवृक्षाय नमः।। ॐ स्वं स्वर्णवेदिकायै नमः।। ॐ रं रत्नसिंहासनाय नमः दक्षांसे।। धं धर्माय नमः वामांसे।।

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

ज्ञां ज्ञानाय नमः वामोरौ। वं वैराग्याय नमः दक्षोरौ।। ऐं ऐश्वर्याय नमः मुखे।। अं अधर्माय नमः वामपार्श्वे।। अं अज्ञानाय नमः दक्षपार्श्वे।। अं अवैराग्याय नमः नाभौ।। अं अनैश्वर्याय नमः हृदये। अं अनंताय नमः उपर्य्युपरि विन्यसेत्।। अं अंबुजाय नमः।। सं संविन्नालाय नमः।। सं सर्वतत्त्वात्मकाय पद्माय नमः।। प्रं प्रकृतिमयपत्रेभ्यो नमः।। विं विकारमयकेशरेभ्यो नमः।। पं पंन्चाशद्वर्णकर्णिकायै नमः।। वं द्वादशक लात्मने सूर्यमंडलाय नमः।। वं षोडशकलात्मने चंद्रमंडलाय नमः।। सं सत्त्वात्मने नमः। रं रजसे नमः।। तं तमसे नमः।। आं आत्मने नमः।। अं अन्तरात्मने नमः।। पं परमात्मने नमः।। ह्रां दीप्तायै नमः।। ह्रीं सूक्ष्मायै नमः।। ह्रां विद्युता यै नमः।। पीठमध्ये सर्वतोमुख्यै नमः।। तदु परि नित्यपूजाचक्रं विधाय।। ॐ ब्रह्मविष्णु- रुद्रांऽम्बिकात्मकाय

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

सौरपीठात्मने नमः।। इति पी ठन्यासः।। मूलेन प्राणायामत्रयं कृत्वा मूलेन व्यापकं कृत्वा ध्यायेत्।। मुक्ताविद्रुमहेमनीलधव-लच्छायैर्मुखैस्त्रीक्षणैर्युक्तामिंदुनिबद्धरत्नमुकुटांत त्त्वार्थवर्णात्मिकाम्।। गायत्रीं वरदा भयां ङ्कुशक शां शुभ्रं कपालं गुणं शंङ्खं चक्रमथारविन्दयुगलं हस्तैर्वहन्तीं भजे। इति ध्यात्वा बहिः पूजोत्तरी- त्या देवीं सौवर्णी च संपूज्य गंधपूष्पधूपदीपनैवे द्यतांबूलाद्युपचारान्प्रकल्प्य किंञ्चिज्जपित्वा।। स्वागतं देवदेवेशि सन्निधौ मे महेश्वरि।। गृहाण मानसीं पूजां यथार्थपरिभाविताम्।।१।। दशधा मूलं जपित्वा जपं देव्याः करे समर्प्य मनसा पुष्पांजलिं दत्त्वा क्षणं तदात्मकं विभाव्य वरदा भयां कुशकशाकपालगुणशंखचक्रभयो न्यादिमुद्राः प्रदर्शयेत्।। इति मानसी पूजा।। अथ बहिः पूजार्थमनुज्ञाप्य बहिः पूजां कुर्य्यात्।। स्ववामे

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

अस्त्रक्षालितं त्रिपदि कां निधायतदुपरि अस्त्रक्षालितं कलशं निधाय शुद्धतोयं मू लेनापूर्य्य मूलेना ष्टकृत्वोऽभिमंत्र्य जातवेदसे इत्यृचा त्र्यंबकमिति ऋचगायात्र्या च सकृदभि मंत्र्य गंधपुष्पाभ्यां पूजयेत्।। ॐ जातवेद सेसु नवा मसोम मराति यतोनिद हातिवेदः सनः पर्षदति दुर्गाणि विश्वानावैव सिन्धु ॐ दुरितात्यग्निः।। ॐ त्र्यम्वकं यजामहे सुगन्धिं ।। ॐ भूर्भुवः स्वः तत्स वितुर्वरेण्यं भर्गो देवस्य धीमहिधियो योनः प्रचोदयात्।। परोरजः सेसाव दोंम्।। ॐ आपोजोति रसो मृतम् व्रम्म भूर्भुवः स्वोरोंम्।। इति ऋ चापाठ गंघपुष्पाभ्यां पुजयेत्।। इति कलश संस्थापनम्।। अथ सामान्या र्ध्यस्थापनविधिः।। तत्रा स्त्रक्षालितं ताम्रपात्रं निधाय मूलेना पूर्य्य मूलेना ष्टवारं संम्मन्त्रा गंधपुष्पाभ्यां पूजयेत्।। इति सामान्यार्ध्यस्थापनविधिः। पीठात्मनोर्मध्ये चंन्दनेन कनिष्ठिकया त्रिकोणं

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

षट्कोणं च कृत्वा ॐ अग्नये हृदयाय नमः।। ॐ ईशानाय शिरसे स्वाहा।। ॐ निर्ऋतये शिखायै वषट्।। ॐ वायवे कवचाय हुम्।। ॐ अग्नये अस्त्राय फट्।। ॐ नेत्रत्रयाय वौषट्।। ॐ पूर्वे अस्त्राय फट्।। सामान्यार्घ्यजलेन प्रोक्ष्य चन्दनेन पूजयेत्।। त्रिकोणे आधारं स्थापयामि।। ॐ आं आधारशक्तिं स्थापयामि।। ॐ पृथिवीद्वीपं स्थापयामि।। तत्र पूजा।। ॐ अग्निमंण्डलाय द्वादशकलात्मने नमः।। ॐ धुं धूम्रायै नमः।। ॐ जं ज्वालिन्यै नमः।। ॐ विं विस्फुलिंङ्गिन्यै नमः।। ॐ सुं सुरूपायै नमः।। ॐ कं कपिलायै नमः।। ॐ हं हव्यवाहनायै नमः।। ॐ कं कव्यवाहनायै नमः।। इति आधार पूजा।। आधारोपरि अर्घ्य पात्रं संस्थाप्य पात्रोपरि पूजा।। ॐ अं अर्कमंण्ड लाय द्वादशकलात्मने नमः।। ॐ तं तापिन्यै नमः।। ॐ धुं घूम्रायै नमः।। ॐ मं मरीच्यै

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

नमः।। ॐ जं ज्वा- लिन्यै नमः।। ॐ रूं रूच्यै नमः।। ॐ सुं
सुमुखायै नमः।। ॐ भों भोगदायै नमः।। ॐ विं विश्वायै नमः।। ॐ
बों बो- धिन्यै नमः।। ॐ धां धारिण्यै नमः।। ॐ क्षं क्षमायै नमः।।
इत्यर्घ्यपात्रपूजा।। विलोममातृकामुच्चर न् शुद्धजलमापूर्य।। ॐ क्षं
नमः।। प्रणवः सर्वत्र। ॐ ळं नमः।। ॐ हं नमः।। ॐ सं नमः।। ॐ
षं नमः।। ॐ शं नमः। ॐ वं नमः।। ॐ लं नमः।। ॐ रं नमः।।
ॐ यं नमः।। ॐ म नमः।। ॐ भं नमः।। ॐ बं नमः।। ॐ फं
नमः।। ॐ पं नमः।। ॐ नं नमः।। ॐ धं नमः।। ॐ दं नमः।। ॐ
थं नमः।। ॐ तं नमः।। ॐ णं नमः।। ॐ ढं नमः।। ॐ डं नमः।।
ॐ ठं नमः।। ॐ टं नमः।। ॐ ञं नमः।। ॐ झं नमः।। ॐ जं
नमः।। ॐ छं नमः।। ॐ चं नमः।। ॐ ङं नमः।। ॐ घं नमः।। ॐ
नमः।।

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

गं नमः।। ॐ खं नमः।। ॐ कं नमः। ॐ अः नमः।। ॐ अं नमः।। ॐ औं नमः ॐ ओं नमः।। ॐ ऐं नमः।। ॐ एं नमः।। ॐ लॄं नमः।। ॐ लृं नमः।। ॐ ॠं नमः।। ॐ ऋं नमः।। ॐ ऊं नमः।। ॐ उं नमः।। ॐ ईं नमः।। ॐ इं नमः।। ॐ आं नमः ।। ॐ अं नमः।। तत्र पूजा।। ॐ सं सोममण्डलाय षोडशकलात्मने नमः।। ॐ अं अमृतायै नमः।। ॐ मं मानदायै नमः।। ॐ पुं पूषायै नमः।। ॐ सं समृद्ध्यै नमः।। ॐ तुं तुष्ट्यै नमः।। ॐ पुं पुष्ट्यै नमः।। ॐ रं रत्यै नमः।। ॐ ज्यों ज्योत्स्नायै नमः।। ॐ श्रीं श्रियै नमः।। ॐ कीं कीर्त्यै नमः।। ॐ अं अङ्गदायै नमः।। ॐ पूं पूर्णायै नमः।।१६।। अंकुशमुद्रया तीर्थमावाह्य।। ॐ गंगे च यमुने चैव गोदावरि सरस्वति। नर्मदे सिंधु कावेरि जलेऽस्मिन्सन्निधौ भव।। योनिमुद्रां प्रदर्श्य धेनुमुद्रयाऽमृतीकृत्य

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

शंङ्ख मुद्रां प्रदर्श्य गंधादिभिः संपूज्य मूलेनाष्टवारम भिमंन्त्र्य मत्स्यमुद्रयाऽऽ च्छाद्यसामान्यार्ध्यजलेन सिंञ्चेत्।। ॐ आत्मतत्त्वाय नमः।। ॐ विद्यातत्त्वायै नमः।। ॐ शिवतत्त्वायै नमः।। ॐ परो रजसे सावदों मिति सप्तकृत्वोऽभिमंत्र्य तज्जलदेवातात्मैक्यं विभाव्य किंञ्चित्पात्रान्तरे गृहीत्वा पूजोपकरण सामग्रीमात्मानं च त्रिः प्रोक्षयेत्।। इतिविशेषा र्ध्यस्थापनविधिः।। अर्घ्यस्योत्तरे पात्रचतुष्टयं पाद्याऽच मनीयमधुपकार्थं संस्थाप्यसकृदभिमन्त्र्य तोयेनापूर्य्य मूलेन त्रिवारमभिमन्त्र्यन्यासक्रमेण धर्मादीन्प्रोक्षणीरूपेण संम्पुज्य तस्मिन्पीठोपरि देवतां विभाव्यऽ सर्वांगेषु पंञ्चपुष्पांञ्जलिं दत्त्वामू लाधारात्कुण्डलीनीमुत्थाप्य द्वारे स्थित्वा तत्रपरमात्मना संयोज्य तदृष्टयाऽमृतधारया देवीं प्रीण यित्वा देवीं प्रसन्नांविभाव्य स्वस्मिन्देव्यात्मैक्यं विभाव्याऽऽ सनादिद्वी

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

अथं पीठ पूजा

अक्षर	ऋषिः	छन्दः	देवता	वर्णः	तत्त्वम्	शक्तिः	मुद्रा	कला	फलानि
त	वसिष्ठः	गायत्री	अग्निः	पीतं	पृथ्वी	ब्राह्मी	सुमुखं	तपनी	आयुष्यम्
त्स	भदद्वाजः	उष्णिक्	वायुः	श्यामं	अप्	गौरी	सम्पूटम्	सकला	आरोग्यम्
वि	गौतमः	अनुष्टुप्	सूर्य्यः	स्वेतं	तेजः	प्रभा	विततं	विश्वा	ऐश्वर्यदम्
तु	विस्वामित्रः	वृहती	विद्युत्	नीलं	वायुः	नित्या	विस्तृतं	तुष्टा	धनदम
र्व	भृगुः	पंक्तिः	यमः	वंहिः	आकाशः	विश्वा	एकमुखं	वरदा	कामदम्
रे	शांडिल्यः	त्रिष्टुप्	वरूणः	अतिशुभ्रः	गंधः	भद्रा	द्विमुखं	रेवती	विद्यादम्
णि	लोहितः	व्यक्ति	वृहस्पतिः	हरितम्	रसः	विलासिनी	त्रिमुखं	सूक्ष्मा	कामदम्
यं	गर्गः	कान्तिः	पर्जन्यः	अग्निपीतं	रूपम्	वित्ता	चतुर्मुखं	ज्ञाना	धनदम्
भ	शांतातपः	वृहती	इन्द्रः	ताम्रं	स्पर्शः	काली	पञ्चमुखं	भर्गा	सन्ततिदम्
र्गो	सनत्कुमारः	सत्या	गन्धर्वः	रक्तम्	शब्दः	जया	षण्मुखं	गोमती	अभीष्टदम्
दे	शुनःशेपः	पंक्तिः	त्वष्टा	श्यामः	वाक्	कान्ता	अधोमुखं	दर्विका	इष्टकन्यादम्
व	भार्गवः	विराट्	मैत्रावरूणिः	पीतम्	पाणिः	शान्ता	शकटम्	वरा	कान्तिदम्
स्य	पाराशरः	विभ्राट्	पौष्णः	विद्युत्	चरणः	दुर्गा	यमपाशं	सिद्धान्ता	चिंतितसिद्धिदम्
धी	पुण्डरीकः	विस्तारपंक्तिः	सुरेशः	शुभ्रम्	उपस्थ	सरस्वती	ग्रथितम्	ध्योना	कीर्तिदायकम्
म	कुत्सः	कत्यायनी	मरूत्	रक्तः	वायुः	विद्युद्वर्णा	उन्मुखोन्मुखं	मर्यादा	सौभाग्यदम्
हि	दक्षः	पंक्तिः	सौम्यः	नीलम्	श्रोत्रम्	विशाला	प्रलम्बम्	स्फुटा	अभीष्टसिद्धिदं
धि	कश्यपः	त्रिष्टुप्	अंगिराः	रक्तः	त्वचा	विभूति	मुष्टिकं	बुद्धिः	त्रैलोक्यमोहनदं
यो	जमदग्नि	जगति	विश्वदेवाः	रूक्मसदृशम्	चक्षुः	कमला	मत्स्यः	योगमातरः	पराश्रयप्रदम्
यो	आत्रेयः	महाजगती	अश्विनौ	उद्यत्सूर्यनिभः	जिव्हा	कला	कूर्मः	योगान्तरा	देवप्रतिग्रहदोषं
नः	विष्णुः	महिष्मती	प्रजापतिः	स्वेतम्	नासिका	पाप्मा	वराहकः	पृथ्वी	त्रैलोक्यदम्
प्र	अंगिराः	नृमती	कुवेरः	रोचनाभं	मनः	अथला	सिंहाक्रांतं	प्रभवा	परानुग्रहदम्
चो	कुमारः	भूछंदः	शंकरः	चन्द्रसदृशं	अहंकारः	परा	महाक्रांतं	उष्मा	तेजसीतिशयदं
द	मृगश्रृंगः	भुवःछंदः	ब्रह्मा	पीतः	बुद्धिः	भृशोरा	मुद्गर्प्	दिध्यामान	स्वर्गप्रदम्
यात्	भगः	स्वः छंदः	विष्णुः	शुफावर्णः	गुदा	वज्रद्वया	पल्लवं	निरज्जनं	स्वर्गलोकप्रदं

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

पान्तानुपचारान्प्रकल्प्य।। बाह्यनैवेद्यं न देयमिति संप्रदायः शिवो भूत्वाशिवं यजेदिति वचनात्।। अथपीठ पूजा।। ॐ त (अक्षर) वशिष्ट ऋषि गायत्री छन्द अग्नि देवता पितबर्ण पृथ्वि तत्वंम् ब्रम्हि शक्ति सुमुखंमुद्रा तपनि कला आयुष्यंम्फलानि भ्योनमः आसनं। पाद्यं। अर्ध्यं। आचमनियं। पुन राचमनियम्। अस्नानं। मधुपर्कं। शुद्धो दकम्। गंन्धंम्। पुष्पं। नमस्कारं। धुपं। दिपं। आदि द्वादसोपचारै पुजनंम्। (वा) यथोपचा रैपु जनंच। (तद्यथा (स०)) प्राणाःयामपुर्वकं) मुलेन। चुतुषष्टि कोष्टपुजनं चमुलेन ।।१।। व्यापकं गाय त्र्युच्चारण पूर्वकं हस्ताभ्याँ पुष्पांञ्जलिंगृहित्वा नासा रंध्रेण।। पुष्पसंञ्चयकल्पितयंन्त्रम ये कल्पितमूर्तिं निःक्षिप्य तत्तत्स्थानगतानि आवरणानि ध्यात्वा आवाहनादिमुद्राः प्रदर्श्याऽऽवाह नं सन्निधापनं सन्निरोधनं सम्मुखीकरणम् अब गुंण्ठनं संकलीकरणं चेति।

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

मूलांते श्रीगायत्रि देवि इहावाहिता भव पुष्पेण देव्या हृदिकरं निधाय ॐ आं ह्रीं क्रौं इति द्वादशवारं जपेत्। ततो भूतशुद्धिं प्राणप्रतिष्ठां विधाय पूजयेत्।। नमः इतिमंत्रेण देव्याः पादांबुजे पाद्यंदद्यात्। स्वाहेति मन्त्रेण मूर्ध्न्यर्घ्यम् वमिति मंत्रेण मुखेआचमनम् ततः स्नानशालायांसुगंन्धिसलिलैःस्नापयित्वा मूलेन शतसंख्येन वा राजोपचारैः स्नापयित्वांऽङ्गप्रोक्षणं कृत्वा मूलेन पीठं संस्थाप्य पूर्वोक्तां ध्यात्वा पंचोपचारैः सम्पूज्य देवतां प्रसन्नां विभाव्य आःवरणपूजां कुर्य्यात्।। तत्रमध्ये।। ॐ मंमणिमण्डूकाय नमः।। ॐ कंकालाग्नि रूद्राय नमः।। ॐ मुंमूलप्रकृत्यै नमः।। ॐ आँ आधार शक्त्यै नमः।। ॐ कूँ कूर्माये नमः।। ॐ अं अनंन्ताय नमः।। ॐ वँ वराहाय नमः।। ॐ धँ धरित्र्यै नमः।। ॐ सुँ सुधासिंधवे नमः।। ॐ रं रत्नद्विपाय नमः।। ॐ मँ मणिमंण्डपाय नमः।। ॐ कँ कल्पतर

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

इंद्रायनमः पूर्वे

वरुणायनमः पश्चिमे

वे नमः।। ॐ स्वँ स्वर्ण वेदिकायै नमः।। ॐ तदु परि रत्नसिंहासनाय नमः।। आग्नेयादि कोणेषु ॐ धँ धर्माय नमः।। ॐ ज्ञँ ज्ञानाय नमः।। ॐ वँवैराग्यायै नमः।। ॐ अंएश्वर्याय नमः।। पुर्वादिदिक्षु।। ॐ अं अधर्माय नमः।। ॐ अं अज्ञानाय नमः।। ॐ अं अवैराज्ञाय नमः।। ॐ अं अनैस्वर्यायनमः।। मध्ये।। ॐ अं अनन्तायनमः।। ॐ अं अंबुजाय नमः।। ॐ आँ आनंन्दाय नमः।। ॐ सं संविन्नालाय नमः।। ॐ संसर्व तत्वात्मक पद्माय नमः।। ॐ पम्प्रकृतिमयपत्रेभ्यो नमः।। ॐ विं विकारमय केशरेभ्यो नमः।। ॐ पँ पंचाशद्वर्णकर्णि कायै नमः।। ॐ अंद्वादश कलात्मनेवंह्नि मंण्डलाय नमः।। ॐ सं सत्वाय नमः।। ॐ रं रजसे नमः।। ॐ तं तमसे नमः।। ॐ आँ आत्मने नमः।। ॐ अं अं तरात्मने नमः।। ॐ कँ कालात्मने नमः।। एतान्युपर्युपरि।।

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

अथपिठपूजा।। पीठस्यपूर्व भागे।। ॐ राँ दिप्तायै नमः।। ॐ री सूक्ष्मायै नमः।। ॐ रूँ भद्रायै नमः।। ॐ रैंविभूत्यै नमः।। ॐ रौं विमलायै नमः।। ॐ रः अमोघायै नमः।। ॐ राँ विद्युतायै नमः।। पीठमध्ये।। ॐ परदेवतायै नमः।। ॐ सर्वतोमुख्यै नमः।। तदुपरि बिन्दुत्रिकोणा वृत्तदलाष्ट करेखात्मकं चतुरस्रं चतुर्द्वारो पशोभितंयंत्रं संस्थाप्य।। ॐ ब्रम्मविष्णु रूद्र बिंवात्मक सौरपीठायनमः।। ईतिपीठ पूजयेत्।। ईति पूजा समाप्ता।। अथ पूर्वोक्त ऋृष्यादिन्यासं कृत्वाप्राणानायंम्यषडङ्ग न्यासंच प्राणा नायम्य।। मुलेन व्यापकं गायत्र्यु च्चारपुर्वकं हस्ताभ्यां पुस्पान्जलिं गृहित्वा नासारंन्ध्रेण पुष्पसंञ्चय कल्पित यन्त्रम ये कल्पित मुर्तिनिक्षिप्य तातस्थानानि।। यन्त्र स्थापितम्।। येंत्रमध्ये पंञ्चोपचारै पुजयेत्।। ॐ मध्ये माहा सरस्वत्यैनमः।। सर्वोपचारार्थे

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

गन्धपुष्पं समर्पयामि।। ॐ पुर्वकोणे गायत्र्यैनमः।। सर्वोपचारार्थे गन्धपुष्पं समर्पयामि।। ॐ नैत्रऋत्यकोणे सावित्र्यै नमः।। सर्वोपचारार्थेगन्ध पुस्पंसमर्पयामि।। वायव्य कोणे।। ॐ सरस्वोत्यै नमः।। सर्वोपचारार्थे गन्धपुष्पं समर्पयामि।। ॐ पुर्वेब्रम्हणे नमः।। सर्वो०। आग्नये ॐ तुर्यायैनमः।। सर्वो०। नैत्रऋत्यै ॐ विष्णवे नमः।। सर्वो०।। पश्चिमे।। ॐ उमायै नमः।। सर्वो०। उत्तरे।। ॐ रूद्रायै नमः।। सर्वो०।। ईशान्यै।। ॐ आज्ञायै नमः।। सर्वो०। पुर्वे०।। ॐ ईन्द्रायनमः।। सर्वो०।। दक्षिणे।। ॐ यमाय नमः।। सर्वो० पश्चिमे।। ॐ वरूणायनमः।। सर्वो०।। उत्तरे।। ॐ कुवेरायनमः।। सर्वो०।। आग्नेयाँ।। ॐ अग्नये नमः।। सर्वो०।। नैत्रऋत्याय।। ॐ अनंताय नमः।। सर्वो०।। वायव्याम्।। ॐ वायुभ्यो नमः।। सर्वो०।। ईशान्यै।। ॐ ब्रम्हणेनमः।। सर्वो०।। पुर्वे

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

ॐ सोमाये नमः।। आग्नये ॐ भौमाये नमः।। दक्षिणे।। ॐ वुधायनमः।।
नैत्रृत्ये।। ॐ वृहस्पतये नमः।। पश्चिमे।। ॐ शुक्राय नमः।। वायेव्यम्।।
ॐ शनैस्चराय नमः।। उत्तरे।। ॐ राहवे नमः।। ॐ केतवे नमः।।
ईशान्यां।। ॐ आदित्याय नमः।। सर्वोपचारर्थेगन्धपुष्पं समर्पयामि।।
पुर्वे।। ॐ प्रशादिन्यै नमः।। ॐ प्रभायै नमः।। ॐ नित्यायै नमः।।
सर्वो०।। दक्षिणे।। ॐ प्रजायै नमः।। ॐ शान्तायै नमः।। ॐ कान्तायै
नमः।। सर्वो०।। पश्चिमे।। ॐ विशालायैनमः ।। ॐ ईशान्यै नमः।।
ॐ व्यापिन्यैनमः।। सर्वो० उत्तरे।। ॐ विश्वधात्र्यै नमः।। ॐ जयावहायै
नमः।। ॐ पशितयायै नमः।। सर्वो०।। आग्नये।। ॐ विश्वंभरायै
नमः।। ॐ विलासिंन्यैनमः।। ॐ प्रभावत्यै नमः।। सर्वो०।। नैत्रृत्यै।।
ॐ दुर्गायै नमः।। ॐ सरस्वत्यै नमः।। ॐ विद्यारूपायै नमः।।

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

सर्वो०।। वायव्ये।। ॐ विमलायै नमः।। ॐ अपहारवत्यै नमः।। ॐ सूक्ष्मायै नमः।। सर्वोपचारार्थे० ईशान्यै।। ॐ परायै नमः।। ॐ शोभनायै नमः।। ॐ भद्ररूपायै नमः।। सर्वोपचारार्थे गन्ध पुष्पंम् समर्पयामि।। धुपं दिपंचय थोपचारै पुजयेत्।। देवता प्रसन्ना विभाव्य आवरण पूजाँकुर्यात् त्रिकोणे मध्ये ॐ व्याहृत्यै नमः।। अथ कोणे ॐ गायत्र्यै नमः।। नैर्ऋत्यकोणे ॐ सावित्र्यै नमः।। वायव्यकोणे ॐ सरस्वत्यै नमः।। त्रिकोणान्त रालेषु ॐ ब्रह्मणे नमः।। ॐ विष्णवे नमः।। ॐ रूद्राय नमः।। मूलेन पुंष्पांञ्जलिं गृहीत्वा।। ॐ अभीष्टसिद्धिं मे देहि शरणागतवत्सले।। भक्त्या समर्पये तुभ्यं प्रथमावरणार्चनम् ईति।। अनेन पुष्पाञ्जलिं दत्त्वा द्विती यावरणं पूजयेत्।। अष्टदलेषु पूर्वादि दिक्षु ॐ आदित्याय नमः।। ॐ भानवे नमः।। ॐ भास्करायनमः। ॐ रवये नमः।।

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

आग्नेयादिकेशरेषु।। ॐ उषायै नमः।। प्रभायै नमः।। ॐ प्रजायै नमः।। ॐ संध्यायै नमः।। मूलमुच्चरन् अभीष्टसिद्धिं मे देहीति० पुष्पांजलिं दद्यात्।। इतिद्वितीयावरणम्।। अथ तृतीयम्।। पुर्वे।। ॐ हृदि ब्रह्मणे नमः।। हृदयाय नमः।। ॐ ईशाने रूद्रायशि खायै वषट्।। ॐ नैर्ऋत्ये ईश्वराय कवचाय हुम्।। वायव्ये सदाशिवाय नेत्रत्रयाय वौषट।। ॐ आग्नये।। ॐ सर्वात्मने अस्त्रायफट्।। तत्तद्देवताभ्यो नमः।। मूलेन पुष्पाञ्जलि गृहित्वा।। अभीष्ट०।। इति तृतीया!वरणम्।। अथ चतुर्थम्।। तद्बहिः पूर्वाद्यष्टदलेषु।। ॐ अमृतायै नमः।। ॐ नित्यायै नमः।। ॐ विश्वंम्भरायै नमः।। ॐ ईशान्यै नमः।। ॐ प्रभायै नमः।। ॐ जयायै नमः।। ॐ विजयायै नमः।। ॐ शांन्त्यै नमः।। मूलेन पुष्पांजलिं गृहित्वा अभीष्टसिद्धिं०।। इति चतुर्थावरणम्।। अथ

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

पंचमम्।। तदवहिः पूर्वाद्यष्टदिक्षु।। ॐ कांत्यै नमः।। ॐ दुर्गायै नमः।। ॐ सरस्वत्यै नमः।। ॐ विद्यारूपायै नमः।। ॐ विशालायै नमः।। ॐ ईशानायै नमः।। ॐ वायव्यै नमः।। ॐ विमलायै नमः।। मूलमुच्चरन्नऽभीष्टसिद्धि०मिति पुष्पांजलिं दद्यात्।। इति पंचमावरणम्।। अथ षष्टम्।। पूर्वाद्यष्टदिक्षु।। ॐ संहारिण्यै नमः।। ॐ सूक्ष्मायै नमः।। ॐ विश्वयोन्यै नमः।। ॐ जयावहायै नमः।। ॐ पद्मालयायै नमः।। ॐ परायै नमः।। ॐ शोभायै नमः।। ॐ रूपायै नमः।। मूलेन पुष्पांजलिम्।। अभीष्टसिद्धि०।। इति षष्ठा वरणम्।। अथ सप्तमम्।। पूर्वाद्यष्टदिक्षु।। ॐ आंब्रांम्हे नमः।। ॐ ईं माहेश्वर्यै नमः।। ॐ ऊं कौमार्यै नमः।। ॐ ॠं वैष्णव्यैनमः।। ॐ लृं वाराह्यै न मः।। ॐ औं चामुण्डायै नमः।। ॐ अः चंडिकायै नमः।। मूलमुच्चरन् अभीष्ट०

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

पुष्पांजलिं दद्यात् इति सप्तमावरणम्।। अथाष्टमावरणम्।। तद्बहिः पूर्वाद्यष्टदिक्षु।। ॐ सों सोमाय नमः।। ॐ बुं बुधाय नमः।। ॐ शुं शुक्राय नमः।। ॐ भौं भौमाय नमः।। ॐ शं शनैश्चराय नमः।। ॐ रां राहवे नमः।। ॐ कें केतवे नमः।। मूलेन अभीष्ट० पुष्पां जलिं दद्यात्।। इत्यष्टमावरणम्।। अथ नवमम्।। पूर्वाद्यष्टदिक्षु।। ॐ लं इंद्राय नमः।। ॐ रं अग्नये नमः।। ॐ यं यमाय नमः।। ॐ क्षं नैर्ऋत्यै नमः।। ॐ वं वरूणाय नमः।। ॐ यं वायवे नमः।। ॐ सं सोमाय नमः।। ॐ ईं ईशानाय नमः।। उर्ध ॐ ब्रह्मणे नमः।। अध ॐ अनंताय नमः।। मूलेन अभीष्ट० पुष्पां जलिं दद्यात्।। इति नवमावरणम्।। अथ दशमम्।। ॐ वं वज्राय नमः।। ॐ शं शक्तये नमः।। ॐ दं दण्डाय नमः।। ॐ खं खड्गाय नमः।। ॐ पं पाशाय नमः।। ॐ गं

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

गदायै नमः।। ॐ त्रिं त्रिशूलाय नमः।। ॐ चं चक्राय नमः।। ॐ अं अम्बुजाय नमः।। मूलेन अभीष्ट० ईति पुष्पांजलिं दद्यात्।। इति दशमावरणम्।। पुनः पंचोपचारैः संपूज्य नीराजनं पुष्पाञ्जलिं दत्त्वा।। यस्यस्मृ त्याचनामोक्त्ता तपोयेज्ञा कृयादिशु।। न्युनंसम्पुर्ण तांयाति सद्योद वन्देत मच्युतम्।। चतुर्भिस्च चतुर्भिस्च द्वाभ्यां पञ्चभिरेवचः।। हुयेते चपुन द्वाभ्यांसमे विष्णु प्रसिद्धतिः।। ईति पुजां समर्प्य जपफलं देव्याः करे समर्प्य पुष्पांजलिं दत्त्वा क्षमाप्य स्वहृदि उद्वास्य पुनर्ऋष्यादि न्यासंकृत्वा निर्माल्यंवि सृजेत्।। इति नित्यपूजापद्धतिः समाप्ता।। अथ नैमित्तिकमाह।। गुरूजन्मदिवसे स्वजन्मदिवसे जन्मनक्षत्रे विद्याप्राप्तिदिवसे पूर्णीमायां व्यतीपाते वा विशेषं पूजयेत्।। इति नैमित्तिकम्।। अथ पुरश्चरणविधिः।। कर्ता स्वशक्त्ताया गुरूं सम्पूज्य तदनुज्ञया देहशुद्धयर्थं

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

चांद्रायणं प्राजापत्यं वा समाचरेत्। पुरश्चरणदिवसे सुगंधसलिलैः स्नात्वा पूजाप्रदेशे चतुरस्त्रं चतुर्द्वारं मण्डपं विधाय।। हृष्टधी र्वाङ्नियमितो मिताहारो जितेन्द्रियः प्रातरारभ्य मध्यांह्नं जपेत्। एवं च चतुर्विंशतिलक्षं जपेत्।। तदुक्तम्।। उक्तलक्षविधानेन कृत्वा विप्रा जितेन्द्रियाः।। क्षीरौदनं तिलं दुर्वाक्षीरद्रुमसमिद्रुमान्।। अष्टद्रव्येण च पृथक्सहस्त्रत्रितयं हुनेत्।। मंत्र फलसिद्धये जपदशांशहोमः।। तद्दशांशेन तर्प्पणम्।। तद्दशांशेन मार्जनम्।। तद्दशांशेन ब्राह्मण भोजनम्।। इति पुरश्चरणविधिः।। जप २४०००००० लछेक चतुर्विंसति लक्षेक दशाँश २४०००० होम तद्दशाँश २४००० तर्पणम्।। तद्दशाँश २४०० मार्जनम्।। तद्दशाँश २४० व्राम्मण भोजनम् ।। तद्दशाँश २४ व्राम्मण दक्षिणा (वा) भेटि।। समस्त एकत्र २६६६६६६६ षड्विंम्सति लक्ष षड्षष्टि शहश्रं षड्सतम् षड्षष्टिच

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

जपसंख्यानि।। पंञ्चत्रिंसति का माला प्रतिदिन जपंम्कुरु।। षषृविंम्सति मासा नाँपुरश्र्चरर्ण उच्यते।। अथ काम्यमुच्येते।। विद्यार्थि वाग्भवाद्याँ लक्ष्मि कामश्रीवि जं वस्यार्थेकांम विजंसर्व।। कामार्थे मायाविजंम् आयुः कामार्थे मृत्यंजय च तुरक्षरी सहितं जपेत्।। ईतिका त्यायनिविधिः।। तत्वः संख्या सह स्त्राणि समंत्रंजुहुयाति लैः। सर्वपापविनि मुंक्तो दीर्घ मायुस्च विंदति।। आयुष्यंसा ज्यहविषा केवले नाथ सर्पिषा।। पर्वा कितैस्ति लैमत्री जुहुयात्त्रि सहस्त्र कंम्।। अरूणा क्षैस्निम ध्वाज्यैः प्रसूनै व्रम्ह वृक्षजैः।। वहुना किमिहोक्तेन यथावत्साधुसा धिता।। द्विजन्मनामियंविद्यासि द्धकामदुग्हा रमृता।। ईति गायत्री जी पूजाविधि समाप्त

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

।। ॐ श्री गायत्रै नमः ।।

हेमाता जगदम्ब हे भगवति हे माईशक्तिलिने।।
क्षेमा ज्ञान दया क्रिपा गुणमति शाराजगत्मादिने।।
आदि शक्ति महातचित्स्वरूपकि त्रिगुण प्रकाश की धनी।।
प्रकाश्गर्दि नुहुंन्छ ब्रम्मशिव कि ब्यापकस्वरुप्किवनि।।१।।

भक्तैमाथिदया गरेर युगकारूप्का प्रभाब्लेगरि।।
औतार्ले रचना गरिजगतमा घुम्छेउस दार्दिन्भरि।।
अभ्यान्तर्रूपलेर बाह्य रुपले शाकार्नि राकार्जगत्।।
गायेत्रिभनिनाम्प्रशिद्ध शवमा चौविश अक्षेर्फगत्।। २।।

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

प्रातै काल माहा कुमार रूपकिहम्साशना व्राम्मणि।।
मध्यानैविचमायोवांश्वरू पकिवृखाश नाशैविनि।।
शायं ङ्कालमाहात वृद्ध भयेकि गरूडाशना वैष्णवी।।
त्रिकाल्का रूपतिन्बीचार गरदा भक्ति दया माधवा।।३।।

चौविस्बर्ण भयोतसब्ह जुर को नैषिृत्प्रकार्ले गरि।।
अधैविंन्दु भनिकहिंन्छ वेदमा व्यापक स्वरूप्योघरि।।
आदि शक्तिनिदान धार गरन्या ॐ काररूप्किधनि।।
सूर्ज्यैं चंन्द्ररवायु अग्नि जल कि आकास सबकि मणि।।४।।

गान्गार्न्या जनलाई तार्नदिल माशन्सार देखिलिन्या।।
जप्कोशिद्ध भयो मनें उहि बखत्वैकुँठधामै दिन्या।।

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

दुखादिजति पर्छ आई धरमा प्राक्तन्करम्ले गरि।।
शारानासहउन्ग्रहादिह रूकासब्दोस् रसैले गरि।।५।।

व्रम्हाविष्णु महेस्वरादितिन का मुञ्चामणिद्विपमा।।
वस्नु हुन्छशदाहिलाई चमरै शक्ति हरुलेरमा।।
कालाशन्नारि बस्नु हुन्छहे भगवति कारण्बनिकाल की।।
जपूगर्दा वकशैहुन्या हजुरकि व्रितिहरि पालकि।।६।।

कर्ताहोईनिधान्चनि जगतमावस्ने गुँणाज्ञान्दया।।
अष्टैशिद्धिहरुझलक्कगरदारत्नाभगत्कि दया।।
नयंन्सुन्दर्लामा कमलदल लाईजितिलिन्या।।
मदन्ले चन्द्रैझै शकलमनको ते ज्हरि लिन्या।।७।।

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

अति लामु कान्ति वि जुलिशरि घुमेको जगनमा।।
लगायाको पाउझुनुनु झुनुनुगर्न्या गगनमा।।
किरिट् केयुर्माला शनल कमलै भोत्रि शुलकरमा।।
वनैमालाशिक्कि पतक हरूभो काँ धविचमा।।८।।

ललाट् माझंम्काछंन्फररफुलन्याचम्कित अवल्।।
अलग्घुम्दा गम्को कुन्डलहरू कोसोभित डबल्।।
हजुर्कोहेमाता क सरिशकुलाम सोभितवयान्।।
निशिदिंन्गार्दाछंन्मुनिहरू गुण को छैनतवमान्।।६।।

सदाभज्छंन्सेस्जि अच्यु तमुखलेखालिनगरि।।
पुगिशक्थ्यो कैलेम उपर दया कत्तिनधरि।।

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

मुलान्तर भगिनि आगामिगोचरित्रि भागिजम्माशवै।।
सम्‌जि पाउ कमल्शरण्परिलिंदापरोईन आपत्कवै।।१०।।

मालिक्हौ जगदम्वहे भगवति पाउचरण्को धुलो।।
आश्रंमपाउकमलगरिहजुर मापुग्छु कि भन्याठुलो।।
आस्राखिनिशिदिंस्मरणगरिलिंदा लोकमा हजुर्कापनि।।
ताँनि वक्सनु हुंन्छ हे भगवति ठुलि कृपालु वनि।। ११।।

हे माता डरपस्नगोरमनमा ग्रहादि काछि द्दको।।
शारा नास्गरिविक्सि योस्भगवति मेराशरिर्भीत्र को।।
आयु सबपरिपुर्ण वर्ख सतकोदारासहितपुत्रको।।
वक्सिस्होसभनिगरया स्तुतिलयो क्षमा रहोस्पुत्रको।।१२।।

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

पुर्वैशिद्ध भये कि हे भगवति वाचार्र हित्निर्विकार।।
गर्नैशक्तछु के मअस्तु तिवयाँयोबुद्धि मेरोधिकार।।
पामर्हु मतबुद्धिहिन भयेको लत्रि रहेकोमछु।।
कृपादृष्टिर होस्मुमाहजुर माभन्छैन मेरो कछु।।१३।।

मम हुंजगदम्ब हे भगवतिहुँ पुत्रतिम्रो मता।।
मेरा दुख् सवटारि बक्स नुहवस्जाँ उन्सवैईव्यथा।।
चोर्डाकुधनमार मेध्महलमाग्रा हादिका तापको।।
त्राहि त्राहिमहुंन्छु हे भगवति निगामिलोंस्सुखको।।१४।।

हेलोके सुदयानिधे त्रिभुवने देवस्थि कातत्परा।।
ब्रम्माविष्णु महेस्वरै शुरगणैस व्सेब्यमानंसदा।।

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

शन्साराखेतवान लेन विकलाशन्तप्यमानोस्महं।।
त्वत्पादौ सरणागतो देदि वसेभूस द्गुरूपाहिमाम्।।१५।।

धेयम्सदानिखिल वेदविदोवदंन्ति।।
गेयं चशुद्ध मतयोयेतयोविरक्ताम्।।
सत्वाम्प्र भोवि गतशोक मवाब्दिशेतु।।
प्रतक्षतोशिभवतां सरणागतोस्मिन्।।१६।।

येदेवै शुरपुजि तैपर चरंसामार्थ तत्वात्मकम्।।
पुन्नागैभुजपुस्पनागवकुलै के सैशुकैरर्चितम्।।
नित्यंध्यान समे वदिप्ति करणंम्कालाग्नि रोदिपनम्।।
तत्शंहार करंम्नमामिशततंम्पाताल संस्तं मुखम्।।१७।।

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

गायत्रि वरदाम्भयाङ्कुस कसांसुभ्रंकपालंगुणम्।।
संङ्खं चक्र मथारबिन्द युगलं हस्तैर्वहन्त्तिं भजेत्।।१८।।
ईति गायत्रिस्तुति पुष्पाञ्जलि समाप्त।।

।। अथ गायत्री आरत्ति।।

ॐ श्रीजय गायत्री त्रिभुवन माता सन्त्तन की
सुखदाई माता सन्त्तन कि सुखदाई।।
त्रिसन्ध्या मैत्रि गुणविराजे वास्तवरूपनरेखा
मानसि अनुभवऋषि मुनि गावे सुरमुनि केवल देखा।।१।।

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

ॐ श्रीजय गायत्री त्रिभुवन माता सन्तन
कि सुखदाई माता सन्तन की सुखदाई।।
शास्त्र कि अनुभव वर्णविचारि मानशिध्यान लगाउ।।
पात्रकि थलिया कपूर कि वाति संध्या आरति गाँउ।।२।।

ॐ श्री जयगायत्रि त्रिभुवन माता सन्तनकि
सुखदाई माता सन्तन कि सुखदाई।।
युगकिलक्षणशवहि बरवाँने दोषछ हामिमहा
शगुणहि अगुणही भेद न जानि गछौंजिद्धि याँहा।।३।।

ॐ श्री जय गायत्री त्रिभूवन माता सन्तन की
सुखदाई माता सन्तनकि सुखदाई।।

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

वालख वुद्धिछ मुरख ह्रांमिमिलियहि कि र्तनगर्छौं
माता व्यापक छौभनिशुन्छौं चरण कृपाभईर्तछौं।।४।।

ॐ श्री जय गायत्री त्रिभुवन माता सन्तन की
सुखदाई माता सन्तन कि सुखदाई।।
तत्वर्णा दिचौविश वर्णै नामरूप अनन्त।।
जस्तै गगन कि पार न पावै वेद पुराण भनन्त।।५।।

ॐ श्री जय गायत्री त्रिभुवन माता सन्तन की।।
सुखदाई माता शन्तन कि सुखदाई।।
प्रणवाध्य ममैत्रिगुण विराजे व्रम्मा विष्णु महेश।।
वर्णकि महिमा मैनाहि जांनु भावरूप किभेश।।६।

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

प्रण वाध्यम मैत्रिगुण विराजेब्रम्मा विष्णु महेश
वर्णकि महिमा मैनहिजानु भावरूपकिभेश।।
ॐ श्रीजय गायत्रि त्रिभूवन माता सन्तन की
सुखदाईमाता संतन कि सुखदाई।।७।।

आदि शक्ति भानु भवानि अनन्त नामतुमारि
चिदरू पशाक्षि वेदकि माता लीजिये शरण हमारि।।
ॐ श्री जय गायत्री त्रिभूवन माता सन्तन की
सुखदाई माता सन्तन कि सुखदाई।।८।।

प्रभात लालि संध्याकालि दिवस श्वेत स्वरूप।।
अङ्गकिन्याश वर्ण न जानि यहिछ विनितखुप।।

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

ॐ श्री जय गायत्री त्रिभुवन माता संतन की
सुखदाई माता संतन कि सुखदाई।।६।।

अखिललोक चराचर माता पाताल पाद तुमारि।।
शिषअजधाम अङ्गविश्राम अपरम्वास्त वपारि।।
ॐ श्रीजय गायत्री त्रिभुवन माता सन्तन।।
कि सुखदाई माता सन्तन कि सुखदाई ।।१०।।

रवि शशि प्रभु कैनेत्र कहिंनद्धतृतीय अग्नि भनिन्छन।।
माता भार्गव वगुरुइनि प्रभुकै स्त्रोत्रैहूँ भनिलिंछन्।।
ॐ श्रीजय गायत्री त्रिभुवन माता सन्तन की
सुखदाई माता सन्तन कि सुखदाई।।११।।

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

ततवर्णादि ऋषि रछन्दतत्व फेर्फलशारा
कविमुनि गावै पार न पावै केवल नाम अधार।।
ॐ श्री जय गायत्री त्रिभूवन माता सन्तन की
सुखदाई माता शन्तनकि सुखदाई।।१२।।

फलरूपवर्ण कि भेदन जानि गर्छौंकिर्तनहामि
चरणर जैको रेणुशिरोपर कृपापाँउभवांनि।।
ॐ श्री जय गायत्री त्रिभूवन माता शन्तन की
शुखदाई माता सन्तन कि सुखदाई।।१३।।

पृथ्वी अप तेज वायु आकाश सुद्धै शत्वप्रधानै
कारण रूपकिमलि नशरोवर बास्तवयेहि समानै।।

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

ॐ श्रीजय गायेत्रि त्रिभूवन माता सन्तनकि
सुखदाईमाता सन्तनकि सुखदाई।।१४।।

रविशशि कोटि वदनतुमारि वचन अगो चरज्योति
मणिपुर बाशिहे अविनासि सन्तकि अच्युत मोति।।
ॐ श्री जय गायत्री त्रिभुवन माता सन्तन की
सुखदाई माता सन्तन कि सुखदाई।।१५।।

शवघट वाशिहे अविनासि द्वोइत कर्म छुटाई
भवभये हारिणि हे जगतारिणि लिजिये जन्म टुटाई।।
ॐ श्री जय गायत्री त्रिभूवन माता सन्तन की
शुखदाई माता शन्तन कि सुखदाई।।१६।।

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

वर्णैमात्र केहि न जानिले खकिभुलमाहीं
तोतरिबात वालखजानि लिनोस्माताशरणमाहा।।
ॐ श्री जय गायत्री त्रिभूवन माता सन्तन् की
सुखदाई माता शन्तन कि सुखदाई।।१७।।

पूजा जापकि न्यु नाधिक शारापुत्र वरावर जाँनि
देश कालकि वस्तुस मर्पणलिनोस्मातुभवानी।।
ॐ श्री जय गायत्री त्रिभुवन माता सन्तन की
सुखदाई माता संतन कि सुखदाई।।१८।।

मानिस जन्म दुर्लभ पाई वेदकि मार्गमाहा।।
ज्ञानवैराग्य भक्ति वड़ाई छुटोस्मातर्जनमयांहां।।

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

ॐ श्री जय गायत्री त्रिभुवन माता सन्तन की
सुखदाई माता सन्तन कि सुखदाई।।१९।।

सनातनधर्म कि जयजय माता विन्तिछयेहियाहां
अधर्मपाप कि नासगराई धर्म वड़ोस हांमिमाहां।।
ॐ श्रीजय गायत्री त्रिभुवन माता सन्तनकि
सुखदाई माता सन्तन कि सुखदाई माता।।२०।।

इति गायत्रि आरति।।

समाप्ता।।

लेखक-श्री १०८ स्वामी विष्णु देवानन्द तिर्थ।।

श्री १०८ ... पुस्तकालय
ॐ श्री १०८ स्वामी
विष्णु देवा नन्द तिर्थ
ॐ श्री १०८ स्वामी
विष्णु देवा नन्द तिर्थ
CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri